भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XIX (उन्नीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 26 सितंबर से 2 ओक्टोबर, 2023 तक

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) सितम्बर					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) सितम्बर/ ओक्टोबर				
		22	23	24	25	26	27	29	30	01	02
	हिसार	0	0	2	0.4	0	0	0	0	0	0
	जींद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	सिरसा	0	0	2	0	0	0	0	0	0	0
	रोहतक	0	0	2	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, 126 से 161 दिन के पश्चात फसल बीजकोष के विकास से लेकर बीजकोष खुलने की अवस्था में है। अधिकांश किसानों ने कपास की पहली चुनाई पूरी कर ली है और दूसरी चुनाई प्रगति पर है । महेंद्रगढ़ जिले में कपास की फसल अच्छी स्थिति में थी और गुलाबी सुंडी का प्रकोप अन्य जिलों की तुलना में कम था। जैसिड की संख्या आर्थिक सीमा से काफी नीचे है जबकि सफेद मक्खी की संख्या अधिकांश क्षेत्रों में आर्थिक सीमा के करीब है। कुछ खेतों में मिलीबग की छिटपुट आबादी भी दर्ज की गई। अधिकांश कपास के खेतों में, हरे गुलरों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक है। गुलाबी सूँडी की संख्या ट्रैप में भी बहुत अधिक थीं। गुलरों का सड़ना और खराब खुले गुलरों को भी देखा गया। कई खेतों में कपास की पत्ती मोड़ने वाली वायरल बीमारी, सूटी मोल्ड और मायरोथेसियम/फंगल पत्ती धब्बा देखा गया।

सिरसा में, 137-152 दिनों के पश्चात फसल बीजकोष बनने और बीजकोष खुलने की अवस्था में है। मौसम बादल, बरसात, गर्मी और उमस भरा था। सिंचाई, उर्वरक प्रयोग और आवश्यकता आधारित कीटनाशक छिड़काव का कार्य प्रगति पर है। कुछ खेतों में कपास की पहली चुनाई पूरी कर ली गई है। कुछ स्थानों पर सफेद मक्खी और जैसिड की आबादी ईटीएल को पार कर गई और कीटों की संख्या क्रमशः 4-30 और 01-10 / 3 पत्तियों के बीच है। हरे गुलरों की क्षति (25-60% के बीच)के आधार पर सभी स्थानों पर गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर गई। कपास के कुछ खेतों में बोल सड़न की घटनाएं देखी गईं।

परामर्श:

हिसार में, चूंकि मौसम अनुकूल है, इसलिए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे तेज धूप के दौरान कपास की चुनाई शुरू करें। कपास की फसल में एक तिहाई गूलर खुल जाने पर सिंचाई न करें। यदि संभव हो तो गुलाबी सूँडी से संक्रमित कपास को अलग से चुनें और संग्रहित करें। आवश्यकता के आधार पर उच्च पुष्पावस्था वाली फसल और जिसमें गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम हो में 13:00:45 (पॉटेश्यम नाइट्रेट) @2 किलोग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। गुलाबी सूँडी के खिलाफ प्रबंधन के उपाय करें क्योंकि अधिकांश सर्वेक्षण किए गए कपास के खेतों में इसका प्रकोप देखा गया है और हरे गूलर को 100% तक नुकसान पहुंचा है। कपास की फसल, जो अच्छी फूल की स्थिति में है, उन फसलों में गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए यह सप्ताह बहुत महत्वपूर्ण है। यदि गुलाबी सूँडी का संक्रमण 5-10% के ईटीएल, रोसेट फूल या 5-10% संक्रमित गूलर या 8 कीट प्रति जाल प्रति दिन लगातार 3 दिनों तक पार कर जाता है, तो फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिलीलीटर/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @160 मिली/एकड़ या अल्फामेथ्रिन 10 ईसी @100 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 100 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। इसके साथ ही बॉल सड़न को प्रबंधित करने के लिए, गुलाबी सूँडी के लिए अनुशंसित कीटनाशक के प्रत्येक छिड़काव के साथ 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम या 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में कॉपर ऑक्सीक्लोराइड भी किया सकता है। सफेद मक्खी के शिशु के गंभीर संक्रमण की स्थिति में, पायरीप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिली या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 240 मिली/एकड़ को 200 लीटर पानी/एकड़ के साथ छिड़काव करें। मायरोथेशियम लीफ स्पॉट, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट जैसे पर्ण रोगों के प्रबंधन के लिए प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% W/W+ डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% W/W एससी @10 मिली या मेटिराम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का पत्तियों पर छिड़काव करें। प्रारंभिक रोगसूचक जड़ सड़न से प्रभावित पैच और मुरझाने से प्रभावित कपास के खेतों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम/लीटर पानी से भिगोकर उपचार करें। प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/ली एससी @6 ग्राम या या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w +डिफ़ेनोकोनाज़ोल

11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55%+पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @20 ग्राम/10 लीटर पानी का उपयोग करके बोल सड़न रोग का प्रबंधन करें। पैराविल्ट के लक्षणों के मामले में, 24-48 घंटों के भीतर कोबाल्ट क्लोराइड 2 ग्राम/200 लीटर पानी/एकड़ की दर से छिड़काव करें। कम से कम साप्ताहिक अंतराल पर और बारिश के बाद नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे नियमित रूप से कीट-पतंगों की घटनाओं की निगरानी करें। केवल सफेद मक्खी की वयस्क आबादी को प्रबंधित करने के लिए, डायफेंथियुरोन 50% डबल्यूपी 200 ग्राम को या एथियन 50%ईसी @ 800 मिलीलीटर/एकड़ को 150-200 लीटर पानी में डालकर 3-5 दिनों के बाद छिड़काव करें। सूटी फफूंद के विकास के मामले में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @2.5 ग्राम/लीटर पानी के 2-3 रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दें। यदि गुलाबी सूँडी, हरे गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली प्रति एकड़ या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 200 मिली प्रति एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @ 160 मिली प्रति एकड़ या अल्फामेथ्रिन 10 ईसी @ 100 मिली प्रति एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 100 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें । बीजकोष विकास चरण के दौरान साप्ताहिक अंतराल पर 2% पोटेशियम नाइट्रेट (13:0:45) के चार छिड़काव करें। बॉल सड़न को नियंत्रित करने के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल @ 1 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें। पैराविल्ट प्रबंधन के लिए, प्रभावित पौधों पर मुरझाने के लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/लीटर का छिड़काव करें, इसके बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड @ 2.5 ग्राम + 20 ग्राम यूरिया/लीटर पानी से पौंधे को भिगोये। पत्तों पर फंगल धब्बों के प्रबंधन के लिए क्रेसॉक्सिम-मिथाइल 44.3% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल @ 1 मिली/लीटर या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% एससी @ 1 मिली/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल @ 1 मिली/लीटर या पायराक्लोस्ट्रोबिन 20% एससी @ 1 मिली/लीटर या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 0.6 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XIX (उन्नीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 26 सितंबर से 2 ओक्टोबर, 2023 तक

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) सितम्बर					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) सितम्बर/ ओक्टोबर				
		22	23	24	25	26	27	29	30	01	02
	अजमेर	0	0	1.4	1	37	2	0	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0
	श्री गंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी	64.5 to 115.5 मिमी			115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा	भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, 91 से 137 दिन के पश्चात फसल, फूल आने बीजकोष बनने और बीजकोष के विकास की अवस्था में है। पिछले सप्ताह भारी बारिश के कारण अंतरकृषि क्रियाओं का संचालन नहीं किया जा सका। जैसिड्स और व्हाइटफ्लाई की संख्या ईटीएल के नीचे देखी गईं। प्रक्षेत्र में बीमारियों का प्रकोप नहीं है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, 124 से 169 दिन के पश्चात फसल गूलर बनने और गूलर फूटने की अवस्था में होती है। देर से बोई गई कपास में अंतरकृषि क्रियाएँ अपनाई गई हैं। कुछ क्षेत्रों में कपास की चुनाई शुरू हो गई है। किसानों के खेतों में रस चूसने वाले कीटों जैसे की जैसिड और थ्रिप्स की संख्या ईटीएल से नीचे देखी गई जबकि सफेद मक्खी और गुलाबी सूँडी का प्रकोप ईटीएल को पार कर गया है।

परामर्श:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने खेतों में उचित जल निकासी चैनल बनाएं क्योंकि हल्की से मध्यम बारिश के साथ बादल छाए रहने का अनुमान है। रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें और यदि यह ईटीएल से आगे चला जाता है तो इसे नियंत्रित करने के लिए डायफेंथियूरॉन 50डब्ल्यूपी @ 600 ग्राम/हैकटैर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 200 ग्राम/हैकटैर का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की निगरानी के लिए 8/एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं और गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं और बताई गई वैधता के अनुसार लुयर बदलें। यदि गुलाबी सूँडी फेरोमोन जाल में फंसने या हरे बोल क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @ 500 मिलीलीटर या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। और जहां फसल की अवस्था 120 दिन की हो, वहां फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @160 मिली/एकड़ या अल्फामेथ्रिन 10 ईसी @100 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 100 मिली/ एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दुबारा छिड़काव की आवश्यकता हो तो , कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। यदि पौधों की पत्तियाँ अचानक गिरती हैं जो अंततः मुरझा (पैराविल्ट) जाती हैं, तो प्रभावित पौधों को कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डबल्यूपी @2.5 ग्राम/ लीटर पानी में या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @12 ग्राम + यूरिया 200 ग्राम/10 लीटर पानी में इन लक्षणों के दिखने के तुरंत बाद पौधों को भिगोकर बचाएं। मायरोथेसियम, कोरिनेस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट, गूलर सड़न रोग और आर्द्र मौसम ब्लाइट जैसे पर्ण रोगों के मामले में, प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें। जड़ सड़न से प्रभावित पौधों और आसपास के स्वस्थ पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा हार्ज़ियानम या टी. विरिडी डब्ल्यूपी फॉर्मूलेशन @ 5 - 6 ग्राम/लीटर पानी से भिगोएँ। एक ही कीटनाशक/कवकनाशी और एक ही समूह के कीटनाशक/कवकनाशी को दोबारा न दोहराएं। दो या अधिक कीटनाशकों के टैंक मिश्रण से बचें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे गूलर के गठन में सुधार और फूलों का गिरना कम करने के लिए पॉटेश्यम नाइट्रेट @ 2% का छिड़काव करें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। यदि जैसिड और सफेद मक्खी की घटना ईटीएल को पार कर जाती है तो नियंत्रण के लिए एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़ या फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या थियामेथोक्साम 25 डब्लूजी @ 40 ग्राम/ एकड़ का छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी के निम्फ की संख्या अधिक है, तो पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 500 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नियमित रूप से गुलाबी सूँडी की उपस्थिति की निगरानी करें और जहां भी गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर जाती है, फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @ 160 मिली /एकड़ या अल्फा-मेथ्रिन 10 ईसी @ 100 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 100 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग लगातार नहीं करना चाहिए तथा आवश्यकता आधारित छिड़काव को पिछले छिड़काव के 12-15 दिन बाद करना चाहिए।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XIX (उन्नीसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 26 सितंबर से 2 ओक्टोबर, 2023 तक

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी) सितम्बर					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी) सितम्बर/ ओक्टोबर				
		22	23	24	25	26	27	29	30	01	02
	खरगाँव										
	धार	0	0	0.8	0	33.4	30	5	2	0	0
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, फसल 91 से 140 दिन के पश्चात फूल आने और बीजकोष बनने की अवस्था में है। निराई-गुड़ाई, अंतरकृषि क्रियाएँ, सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग फसल के चरणों के अनुसार किया गया है। पिछले सप्ताह लगभग सभी इलाकों में व्यापक बारिश हुई थी इसलिए खेतों में सिंचाई की कोई जरूरत नहीं थी। आंधी-तूफान के कारण फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है। लगातार बारिश के कारण खेत खर-पतवार से भर गए हैं। नियमित रूप से भारी बारिश और तूफान के कारण कीटों की संख्या बहुत कम देखी गई। कुछ इलाकों में पोटैशियम की कमी दर्ज की गई है। कुछ खेतों में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट और सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट देखे गए।

परामर्श:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खेतों में जलभराव की स्थिति से बचने के लिए उचित जल निकासी का प्रबंध करें। बुवाई के 90 दिन बाद 25% नाइट्रोजन और बुवाई के 120 दिन बाद 10% नाइट्रोजन युक्त रासायनिक उर्वरक डालें। इन पोषक तत्वों की विभाजित खुराकें कॉलम विधि द्वारा 10 से 15 सेमी की गहराई पर डालनी चाहिए। पोटेशियम की कमी वाले क्षेत्रों में पोटेशियम सल्फेट 0.5% का छिड़काव करें। यदि खेतों में अचानक सूखने या पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देते हैं, तो प्रभावित पौधों के चारों ओर तुरंत कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @12 ग्राम + यूरिया 1.5% डालें। मौजूदा क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार खेतों में बैल से चलने वाले कोल्पा से निराई-गुड़ाई करें। गुलाबी सूँडी की गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। रोसेट फूलों की उपस्थिति का निरीक्षण करें और उन्हें इकट्ठा करके तुरंत नष्ट कर दें। यदि गुलाबी सूँडी ईटीएल से अधिक हो तो प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी/डब्ल्यूजी @25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या क्रेसोक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 10 मिली या प्रोपीनेब 70 डबल्यूपी @25 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन5% डबल्यूजी @20 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिलाएं एवं सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा, मायरोथेसियम लीफ स्पॉट, कोरिनेप्सोरा पत्ती धब्बा, अन्य फफूंद पत्ती धब्बों और फफूंद बोल सड़न रोगो के खिलाफ खेतो में पत्तियों पर छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक के संबंध में विस्तृत जानकारी, जैसे कि मिट्टी, किस्मों, उर्वरक आवेदन, बुवाई के तरीकों, सिंचाई प्रणालियों, खरपतवारों, कीटों और बीमारियों के प्रबंधन आदि को भाकृअनुप –केकअनुसं, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित **सीआईसीआर कॉटन ऐप** द्वारा ली जा सकता है। ऐप को गूगल प्ले स्टोर से बिना किसी शुल्क के डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल विकास चरण विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह को भाकृअनुप –केकअनुसं की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है, ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श दिया जा सके ।